सुशीला टाकभौरे के कथासाहित्य में दलित जीवन

अश्विनी किसन वायदंडे* **डॉ. नानासाहेब जावळे†**

a9921637874@gmail.com **jawalenanasaheb@gmail.com**

सारांश:

इस शोध-पत्र में दलित साहित्य की प्रमुख लेखिका सुशीला टाकभौरे के कथा साहित्य में दलित जीवन के यथार्थ चित्रण का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। लेखिका ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में दलितों के साथ होने वाले सामाजिक अन्याय, जातिगत भेदभाव, स्त्री शोषण और सामाजिक असमानता को प्रमुखता से उठाया है। उनके संग्रह "टूटता वहम", "अनुभूति के घेरे", "संघर्ष", और उपन्यास "नीला आकाश", "तुम्हें बदलना ही होगा" व "वह लड़की" में दलित चेतना, अंबेडकरवादी विचारधारा, और स्त्री मुक्ति आंदोलनों को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन रचनाओं में दलित समाज की पीड़ा, आत्मग्लानि, संघर्षशीलता और मुक्ति की आकांक्षा को स्वर दिया गया है।

मुख्य शब्द: *दलित साहित्य, सुशीला टाकभौरे, अंबेडकरवाद, स्त्री चेतना, जातिभेद, सामाजिक अन्याय, दलित नारी, अंतर्जातीय विवाह, संघर्ष, समानता, आत्मसम्मान।*

सुशीला टाकभौरे के कहानियों में दलित जीवन

सुशीला टाकभौरे का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के सिवनी तहसील में 4 मार्च 1954 को एक दलित वाल्मीकि परिवार में हुआ। उनके माता-पिता ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे। दो बड़े बहनों ने भी ज्यादा शिक्षा प्राप्त नहीं की थी इस पारिवारिक वातावरण में अपनी जिद विश्वास लगन और माता के सहयोग बल पर उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण की। लेखन के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही थी उन्होंने आठवीं कक्षा में पहली कहानी लिखी थी फिर उन्होंने कविताएं भी लिखने के लिए शुरुआत की। कालांतर में कहानी और उसके साथ गद्य की विधाओं में भी अपना योगदान दिया। दलित संवेदना स्त्री सरोकार यह उनकी रचनात्मक लेखन का मूल स्वर था इसके साथ उन्होंने विविध प्रकार के विमर्शों पर भी लेखन किया।

* **पी-एच. डी. शोधार्थी, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे**
अनुसंधान केंद्र- के. जे. सोमय्या कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोपरगाव-423601

† **शोध मार्गदर्शक, के. जे. सोमय्या कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोपरगाव-423601**

सुशीला टाकभौरे की कहानी साहित्य में उनकी विविध रचनाएं प्रचलित है। उनके तीन कथा संग्रह प्रसिद्ध है। टूटता वहम, अनुभूति के घेरे और संघर्ष। जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी घटित होती है कि जिसकी चोट अधिक गहराई से होती है। उनकी छाप व्यक्ति के दिल में बड़ी गहराई के साथ बनी रहती है। टूटता वहम इस कहानी में सुशीला टाकभौरे ने निम्न वर्ग के लोग और खास तौर पर दलित जातियों के प्रति उच्च जाति के लोगों में अंतर इसका चित्रण किया है।

लेखिका और उनके पति जिस स्कूल में कार्यरत थे, वहां सभी लोग उन्हें सम्मान देते थे। सभी लोग उनके कार्य पर खुश रहते थे। वह दलित जाति के हैं। ऐसा एहसास भी स्कूल में रहते हुए नहीं हुआ। सभी लोग उनके साथ मिलजुल कर रहते थे। पिकनिक जाते थे। स्कूल में कई मेहमान आते तो उनके पति की पहचान कराते थे। पहचान करते समय वह जाति का जिक्र हर बार करते थे। व्यवस्थापक द्वारा परिचय कराते समय वो जाती का जिक्र करना यह उनके प्रतिहीनता का सूचक था। व्यवस्थापक कहते थे कि यह वाल्मीकि जाति के हैं, फिर भी हमने इनको संस्था में रखा है। ऐसी स्थिति में सुशीला जी का वहम टूटता है, वर्षों से मिल रहा मान सम्मान यह एक दिखावा है। दया भावना मात्र है। तभी लेखिका के मन में अपमानित होने की भावना निर्माण होती है, वह दुखी होकर सोचती है। "हमारी जाति का बार-बार उल्लेख करने के पीछे व्यवस्थापक जी का मकसद क्या है? क्या वे हमें दूसरों के सामने नीचा दिखाना चाहते है। जैसे सभी शिक्षक बने वैसे ही हमें भी शिक्षक की नौकरी मिली है।"

उच्च जाति वाले लोग निम्न जाति वाले लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं कि, वह सोचते भी नहीं उनके मन को ठेस पहुंचेगी। वह निम्न जाति के लोगों का विज्ञापन जैसा इस्तेमाल करते रहते हैं। लेखिका को ऐसा लगता है कि, इन लोगों ने हमें पति-पत्नी को शैक्षिक योग्यता देखकर लिया है? या जाति को देखकर लिया है? प्रदर्शन के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं, सामने वाले के दिल पर चोट पहुंचती है, यह वह सोचते भी नहीं।

लेखिका एक उच्च प्रतिष्ठित कॉलेज में प्राध्यापिका के रूप में कार्य करने लगी। सभी लोग मिलजुलकर रहते थे। एक-दूसरे का टिफिन खाते थे। अपनेपन का एहसास होता था। एक बार सभी प्राध्यापिका मिलकर चाय की दुकान पर चाय पीने के लिए जाते हैं। सभी एक साथ बैठी है कुछ समय बाद उनके कॉलेज की सफाई कर्मी महिला चाय पीने के लिए आती है और उनके साथ बैठती है। एक ब्राह्मण प्राध्यापिका गुस्से से कहती है- "क्या मैनाबाई इतनी जगह छोड़कर तुम्हें यही बैठना था क्या?"

लेखिका अपनी तुलना मैनाबाई के साथ करके दुखी हो जाती है, और सोचती है। सफाई कर्मी के प्रति उन लोगों का आचरण देखकर दुखी हो जाती है। "बाई और मुझ में क्या फर्क है? यही कि वह कॉलेज में झाड़ू लगाती है और मैं अच्छे कपड़े पहन कर अध्यापन का कार्य करती हूं। मैं प्राध्यापिका हूं। इसीलिए यह सभी अपने साथ खाने का आग्रह करती है….. जबकि बाई इनके नजदीक भी बैठ नहीं सकती। कुछ भी हो फिर भी हमारी जाती तो एक है आत्मग्लानि मेरे ऊपर परत-दर-परत चढ़ती जा रही है।"

प्रस्तुत कहानी में दलित समाज के लोगों के प्रति समाज के अच्छे बर्ताव तथा दोहरी मानसिकता को चित्रित किया है। हमारे संपूर्ण समाज को एकजुट होकर विसंगतियों को प्रतिकार करने की जरूरत है। एक जैसे समाज का निर्माण करना है कि, जहां जाति धर्म आदि. से परे इंसान और इंसानियत को ज्यादा महत्व दिया जाता है।

'झरोखे' इस कहानी में लेखिका ने दलित जातीय बंधनों पर लिखा है। वह कहती है कि, दलितों को ना चाह कर भी पितृक रोजगार करना पड़ता है। दलितों के घर बस्ती से बाहर ही रहे हैं, उधर सब अंधेरा रहता था। उच्च वर्गीय लोगों ने दलित लोगों के मन में उच्च वर्गीय उच्च पद पर काम करेंगे और दलित छोटे पद पर काम करेंगे। ऐसी सोच निर्माण की है। ऐसी हीनवृत्ति हो जाने के कारण दलितों का विकास नहीं हो रहा है। दलित समाज पर पढ़ लिखकर ही अपना अस्तित्व निर्माण कर सकता है।" हमारा काम रोजगार छोटा होने के कारण छुआछूत का भेदभाव किया जाता है। यदि हम सब पढ़ लिखकर अपने योग्यता बनाएंगे और अच्छी नौकरी करेंगे तब हमसे भेदभाव नहीं करेंगे, दलितों को अब पता हो चुका है कि, उनकी उन्नति का मार्ग शिक्षा ही है।"

'विचारभूमि' कहानी में लेखिका ने दलित महिला मुक्ति आंदोलन की विचार प्रणाली को उजागर किया है। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने दलित समाज में परिवर्तन लाने के लिए अपने साहित्य लिखने के लिए प्रेरित किया और दलित साहित्यकारों का विकास भी हो रहा है। दलित मंच की स्थापना की है और दलित साहित्य का समर्थन भी किया जा रहा है। "दलितों पर हुए सदियों के अन्याय-शोषण और उनकी पीड़ा ही दलित साहित्य की पृष्ठभूमि है। दलित साहित्यकार अपनी व्यथा कथा संपूर्ण दलित समाज की व्यथा-कथा के रूप में बेबाक होकर लिख रहे हैं और संपूर्ण समाज तक पहुंचा रहे हैं और संपूर्ण दलित समाज, दलित साहित्य और दलित मुक्ति आंदोलन से ही सुधारा जा सकता है।

'टूटता वहम' कहानी संग्रह में लेखिका ने नई चेतना जागृति का प्रयास किया है। दलित समाज की समस्या, पीड़ा, शोषण, यातना, संघर्षशीलता आदि को चित्रित किया है। सुशीला टाकभौरे ने अपनी कहानियों से दलित जीवन की विविध रूपों का संवेदनशील ढंग से व्यक्त करती है।

अनुभूति के घेरे कहानी संग्रह में दलित स्त्री त्रासदी का चित्रण किया है। समाज में अन्याय अत्याचार का शिकार नारी ही बन रही है। नारी का शोषण नारी होने के कारण हो रहा है। इनकी कहानी वर्ण व्यवस्था, जातिगत प्रवृत्ति या छुआछूत, सामाजिक विसंगतियां इनके तह में जाकर उनकी पड़ताल करती है।

'प्रतीक्षा' कहानी में शिक्षा को महत्व दिया है। नारी शिक्षित होकर मान-सम्मान, अधिकारी स्थान, खुद के पैरों पर खड़ी रहने के बाद भी उसको समाज या परिवार में मान-सम्मान नहीं मिलता। उसको हमेशा कमजोर नारी के रूप में ही देखा जाता है।

अनुभूति के घेरे कहानी संग्रह में लेखिका ने नारी की वेदना, शोषण, पीड़ा को स्वयं एक नारी होने के कारण भावनाओं को अच्छी तरह से समझकर व्यक्त किया है। इस कहानी संग्रह में नारी को आत्मनिर्भर होने के लिए कहा गया है। नारी को आगे बढ़ाकर सम्मान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। बेटा बेटी भेद कम करने का प्रयास किया है। इस तरह लेखिका ने नारी को सफलतापूर्वक जीवन की ओर ले जाने का प्रयास किया है।

सुशीला टाकभौरे की 'संघर्ष' कहानी में दलितों में जागृति करने का प्रयास किया है। दलित भी मनुष्य है, वह खुले आम अपना जीवन व्यतीत कर सकता है वह अपने परिवार के लिए अपने अधिकारों के लिए लड़ सकता है। अत्याचार के विरोधी आवाज उठा सकता है। संघर्ष कहानी में दलितों के शोषण, अन्याय, अत्याचार को चित्रित किया है। लेखिका ने शंकर नामक पत्र के माध्यम से दलित जातियों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार, जाति भेद दमन को चित्रित किया है। दलित उच्च वर्गीय लोगों के घर भी जाता है, तब उसे बाहर ही खड़ा रहने के लिए इशारा दिया जाता है। "घर में मत आ..... बाहर भाग, बाहर दूर खड़ा होकर बात कर....."वह गलती से भी घर में जाता तो पानी छिडकाते है और घर को पवित्र करते है। दलित को शिक्षा से दूर ही रखा गया है, इससे वह लोग कमजोर बन रहे हैं। और आज फिर भी लोग थोड़ा सचेत हो गए हैं।

'जन्मदिन' कहानी में भंगी समाज का चित्रण किया है। समाज उनके साथ कैसा अमानवीय व्यवहार करता है, उनकी व्यथा को चित्रित किया है। जाति व्यवस्था में अस्पृश्यता माने जाने वाले भंगी समाज को बस्ती से बाहर बसाया गया है। उनके आसपास सवर्ण जाति के लोग नहीं रहते। उनको बस्तियों से बाहर रहने के लिए मजबूर किया जाता है। इस वजह से वह शिक्षित सभ्य समाज से अलग-अलग रहने के कारण उनकी दुनिया अलग हो गई। यहीं रहकर वह कुछ नहीं सोच पाते हैं। इसलिए उनका विकास नहीं हो पाता है। यह दूसरो का मैला अपने सिर पर लेकर चलते हैं लेकिन अब शिक्षा से आगामी पीढ़ी जागृत हो रही है। "हमारा देश स्वतंत्र होकर कितने वर्ष बीत गए फिर भी हम वही के वही है। हमारी आजादी हमें कब मिलेगी? आज तक आप लोगों में से किसी ने भी यह नहीं सोचा किसी ने भी इस पुश्तैनी काम को छोड़ने का साहस नहीं किया। हम क्यों उठाये अपने सिर पर दूसरों का मैला ऐसा अपने कभी क्यों नहीं सोचा।"

"आज दलित समाज के समाज सुधारक डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर को पहचाना और उनके विचारधारा को भी पहचान लिया। मैं बाबासाहेब अंबेडकर के कार्य और विचारों से अपनी बिरादरी को परिचित कराऊंगा, उन्हें सच्चाई का ज्ञान कराऊंगा।"

'बदला' कहानी में दलित लोगों के अन्याय-अत्याचारों का शोषण इसको वर्णित किया है।" कोई भी कालखंड रहा हो, अन्याय अत्याचार की घटनाएं हमेशा होती रही है। शक्तिशाली दुराचारी लोक शक्तिहीनों पर अत्याचार करते आए हैं। बल्कि कहना यह चाहिए कि, शक्तिशाली शोषक अन्याय अत्याचारों के द्वारा शक्तिहीनो को अधिक निर्बल और लाचार बनाते रहे हैं। शक्तिशाली अपनी शक्ति का दुरुपयोग भी करते हैं। दलितों के प्रति सवर्ण का व्यवहार गलत है रहा है। अब दलित बदल चुके हैं कि अब वो बदला लेने का सोच

रहे हैं। हम सब एकजुट होकर उनको ताकत दिखानी है। बदला लेने की भावना से उनका आत्मविश्वास जागृत हो उठा है।

'छौआ मां' कहानी में झाड़ू-पौछा, सफाई काम करने वाली महिला की व्यथा है। सवर्ण लोगों के गंदे कपड़े धोती है। यह सब काम करने के बावजूद भी उन्हें घर के भीतर आने नहीं देते, ऊंची जाति के होने के कारण वो उसके साथ बुरा बर्ताव करते हैं।

छौआ मां कि बेटी उसको कोसती है – "खुद जिंदगी भर पुरे गांव का नरक उठाती रही। सबका दलिददर समेटती रही। अब मेरे पीछे यह मुसीबत लग रही है यह सब उसी के कारण हो रहा है। लोगों को आदत डाल दी है करेगी…. उसके बिना नहीं होयगो….. रात दिन दौड़ती फिरे है। सबके लिए मरी जाये है….. अब मोहे भी गिरा रही है। जइ दलदल में पीढ़ी परंपरा चलाते रहे, अब ये परंपरा गले में फंसा रही है।" दलितों को परंपरा के नाम पर जो काम करते आ रहे हैं, उनकी नई पीढ़ी नहीं ने भी यही गंदगी भरे काम करना चाहिए यह सिलसिला चलता आ गया है। ना चाहे भी वह स्वर्ण के गंदे काम करते हैं अब दलित लोग भी सम्मान की जिंदगी जीना चाहते हैं। अब आक्रोश के साथ खाने लगे हैं, "यह कोई जबरदस्ती है कि करना ही पड़ेगा यह काम? काम है या जबरदस्ती?"

'चुभते दंश' इस कहानी में सवर्ण लोगों की मनमानी का वर्णन किया है। कहानी की तक्षशिला वाघमारे अंबेडकरवादी विचारधारा की है। महापरीनिर्वाण दिन पर भी सवर्ण लोग अपनी ही मनमानी कर रहे हैं। दलितों को अपने विचार व्यक्त भी नहीं करने दे रहे हैं। सवर्ण लोग ऐसा सोच रहे हैं कि, वह अंबेडकरवादी विचारों को अपनाएंगे तो दलितों को सम्मान देना पड़ेगा।

इस कहानी की पात्रता तक्षशीला वाघमारे इस स्थिति को देखकर दुखी हो जाती है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका यही कहना चाहती है कि, सवर्ण लोगों का वर्चस्व कम करके दलितों ने अपना वर्चस्व बनाना है, तभी दलितों का विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

'संभव-असंभव' कहानी में दलित लड़की और ब्राह्मण लड़की का चित्रण किया है। कहानी में समाज में शूद्रों की स्थिति का वर्णन किया है। समाज कहने के लिए कहता है की जाति भेद कहा है, सब लोग एक साथ खाते पीते हैं, फिर भी समाज में बराबरी की वागणूक दलितों को मिलती है क्या? "दुनिया की रीति रिवाज समाज की परंपराएं बहुत बदल गए हैं। अब तक किस युग में जी रही थी? अगले जन्म की बातें बिल्कुल बकवास है। जो करना है, जो पाना है, वह इसी जन्म में संभव है" वह लड़की अब समाज की बातें नहीं सुनने वाली है, वह अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहती है और सम्मान की जिंदगी जीना चाहती है।

संघर्ष कहानी संग्रह में लेखिका ने दलित वर्ग में हो रहे बदलाव के बारे में चित्रण किया है। दलित आंदोलन से मनुष्य के भीतर उत्पन्न होने वाली ऊर्जा को उजागर किया है। इस कहानी के माध्यम से पिछले समुदाय को अंबेडकरवादी विचारधारा से प्रेरित करना। यह उद्देश्य रहा है। दलित वर्ण के में जागृति फैलाकर

शिक्षा से समाज में परिवर्तन लाना और आगे की पीढ़ी में सुधार आए और एक विकसित समाज का निर्माण हो।

सुशीला टाकभौरे के तीनों कहानी संग्रह में दलित समाज वर्णन किया है, इस कहानी संग्रह से माध्यम से पता चलता है कि, दलित समाज की स्थिति कैसी है। सवर्ण लोग उनके ऊपर किस प्रकार अन्याय अत्याचार करते हैं। उनको अपने घर का नौकर बनाते हैं। समाज से अलग रखकर उनका मनबल कमजोर करते हैं। उनको शिक्षा प्राप्त नहीं करने देते हैं। पितृसत्ता रोजगार करने के लिए उनको ऊपर जबरदस्ती करते हैं। उन्हें सम्मान नहीं देते, दलितों को अपने विचार प्रकट करने का अधिकार नहीं देते उच्च वर्गीय लोग अपनी ही मनमानी करते हैं।

टूटता वहम कहानी में लेखिका दलित को अंबेडकरवादी विचारों से प्रेरित होकर अपनी रक्षा करने के लिए कहती है। अनुभूति के घेरे कहानी संग्रह में लेखिका ने दलित पीड़ित महिलाओं के शोषण स्थिति को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। समाज दलित नारियों को किस नजरिया से देखता है, उनको अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया है। संघर्ष कहानी में लेखिका ने दलितों को संघर्ष कि ओर इशारा करती है। इन कहानियों में लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि निम्न स्तर के लोग निम्नता की ओर जा रहे हैं, उच्च वर्ण के लोग उच्च स्थान पर जा रहे हैं। दलित अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता दिखाई दे रहा है। नारी खुद अपने अधिकारों के लिए जागरूक हो रही है। समाज के कुछ लोग भी अभी ऐसा कह रहे हैं कि दलित लोगों को हमारी तरह जीने को कब मिलेगा? ऐसे कई सवर्ण लोगों ने दलितों को साथ देते हुए समर्थन किया है। सुशील टाकभौरे ने अपने साहित्य में यही दर्शाया है की, मान सम्मान इज्जत इन बातों का ख्याल जितना सवर्ण को है उतना ही निम्न वर्णों को के लोगों को भी है। दलित वर्णों के लोगों को भी अधिकारों के प्रति जागरूक होना जरूरी समझा है। ऐसा करने से उनका भविष्य उज्ज्वल बन सकता है। लेखिका ने समाज को नई दिशा प्रदान करने का कार्य किया है और समाज में शैक्षिक जागरूकता फैलाने का काम किया है।

सुशीला टाकभौरे जी के उपन्यासों में दलित जीवन

सुशीला टाकभौरे के नीला आकाश, तुम्हें बदलना ही होगा, वह लड़की यह उनके प्रसिद्ध उपन्यास है। 'नीला आकाश' उपन्यास में उन्होंने दलित जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। दलितों के शोषण के कारण हो उनको अभाव पूर्ण जीवन जीना पड़ता है। यह चित्रित किया है। दलितों का उत्पीड़न शोषण के सवर्ण लोग षडयंत्रों के साथ करते हैं। भारतीय समाज में अनेक वर्षों से जाति भेद और वर्ण भेद की परंपरा चलती आ रही है।

'नीला आकाश' उपन्यास दलित की दशा, दिशा, वर्तमान स्थिति का चित्रण करता है। सवर्ण और छुआछूत का भेद दलितों की आपसी संगठन और भाईचारे की भावना से मिटाया जा सकता है। इस उपन्यास में मातंग और वाल्मीकि समाज की एकता का उदाहरण दिया है। दलित जातियां एकता और प्रेम के लिए

एकत्रित होगी तो बड़ी ताकत बनेंगी। दलित जातियों में भी अंतरजातीय विवाह होने चाहिए, ऐसा करने से पूरा दलित समाज एकसूत्र में बंधा रहेगा। दलित परिवार छोटे होने के कारण अनावश्यक खर्च बचा कर अपने बच्चों की परवरिश कर सकते है। इस उपन्यास में इन सभी मुद्दों की ओर संकेत करता है। इस उपन्यास में भिकुजी, चंदरी जैसे दलित वर्ग के प्रतिनिधि पात्र है, जो केवल स्वयं तक सीमित नहीं है बल्कि वह अपने दलित शोषित समाज की मुक्ति और उत्थान के लिए प्रयास करते हैं।

नीला आकाश उपन्यास में कन्हान महाराष्ट्र के एक गांव की छोटी-छोटी बस्तियों का है। इस गांव की परंपरा अन्य गांव और शहर के लोगों जैसी है। सदियों से चली आ रही छुआछूत सामाजिक भेदभाव यह भी है। पूरा गांव जाती और वर्ण के अनुसार बंटा है। उसमें ब्राह्मण, तेली, कुनबी सबकी अलग-अलग बस्तियां है। इन सब बस्तियां से दूर दलित लोगों की बस्तियां है। आर्थिक स्थिति के कारण इनका जीवन अभावग्रस्त रहता है। औरत और पुरुष यह दोनों पीढियो से चलते आ रहे काम करते है। "घर की प्रौढ और बुढ़िया औरतें दाई का काम करती है। पुरुष बैंड बाजा और शहनाई बजाते हैं। सवर्ण के घर आंगन की सफाई पशुओं के बाडे की सफाई भी करते हैं। "दलित लोग सवर्ण लोगों के यहां काम करके जूटा खाना, रोटी टुकड़ा, फटे पुराने कपड़े मांग कर लाते हैं। दलित सवर्ण लोगों के घर बहुत मेहनत करते हैं फिर भी वह कुछ नहीं कमाते।" कड़ी मेहनत के बाद खा पी कर दिल खुश हो जाए। इससे ज्यादा और क्या चाहिए हमें कौन सा धन जोड़ना है। मरने के बाद अपना धन छाती पर रख कर ले जाना है। दलित लोगों के हाथ में कुछ कमाई आ जाते हैं तो वह निश्चित हो जाते हैं ना भविष्य की चिंता रहती है और ना ही वर्तमान कि।

दलित अंधविश्वास जैसी बुराइयों से घिरे रहते हैं। सेवा नगर के वाल्मीकि परिवार के लोग अंधविश्वास के कारण ग्रामदेवी की पूजा करते हैं। भीकूजी और चंदरी भी यही करते हैं। भिकुजी अपने बेटे रामकिशन को नौकरी लगने के बाद भरई माता और मसान की पूजा रखते हैं। भिकूजी की मां कहती है कि, "पूजा करना तो अच्छे से करना खर्च में कमी नहीं होनी चाहिए भले ही हमें महीना 15 दिन भूखा रहना पड़े मगर पूजा के दिन कोई कमी नहीं होनी चाहिए"। अंधविश्वास के कारण कभी-कभी मेहनत से कमाया पैसा ऐसे ही बहा देते हैं।

भीकूजी आशावादी प्रवृत्ति का है। समाज में परिवर्तन करने के लिए उसका मन छटपटाता है। वह सोचने लगा "उच्च वर्ण लोगों ने हमें भी इस तरह अपने आश्रित बना कर रखा है। हमारी शक्ति को आगे बढ़ाने की हमारी क्षमता को उन्होंने हमसे छीन लिया, हमें कमजोर और असहाय बना दिया ऐसा क्यों किया हमारे साथ।"

सेवा नगर में एक संस्था की स्थापना की उसकी सदस्या नीलिमा थी। उस संस्था का नाम मातंग समाज जागृति मंडल था, इसमें समाज जागृति का काम किया जाता है। नीलिमा महिलाओं को पुरुषों से बराबर स्थान देना चाहती है। मातंग जाती और वाल्मीकि जाति के लोग गुरु वाल्मीकि और डॉक्टर अंबेडकर पर बहस करते हैं। नीलिमा और आकाश डॉक्टर अंबेडकर उनके कार्य सभी को बताते हैं। "महाड के चवदार तालाब का पानी लेने के अधिकार के लिए डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर ने कितना संघर्ष किया। नासिक के कालाराम

मंदिर में प्रवेश के लिए भी अंबेडकर ने कितना संघर्ष किया।" इन्होंने मंडल का नाम बदलकर दलित समाज जागृति मंडल कर दिया।

नीला और आकाश यह दोनों बुद्ध धर्म की रीति से विवाह करते हैं और समाज में एकता का संदेश फैलाते हैं। अंतर्जातीय है विवाह करते हैं तो कई लोग इसका विरोध करते हैं। नीलिमा कभी-कभी वर्तमान के बारे में सोचती है "यदि वह नहीं पढ़ती तो क्या करती जो काम उसकी जाति के लोग रोजगार के रूप में कर रहे हैं, वह भी वही काम करती, कहीं बैठकर सूपा, डलिया, टोकना बना रही होती। नहीं तो अपनी बुआ लक्ष्मी और पार्वती की तरह कहीं झाड़ू पोछा लगाने का काम कर रही होती। कहीं बर्तन धोने का कर रही होती। सीता और राधा की तरह अस्पताल में सफाई का काम कर रही होती।" जिस प्रकार वह सोचकर कांप जाती है। सब लोग मान जाते हैं विवाह उत्सव भी मानते हैं "पुरानी परंपराओं पर नई परंपराओं की विजय।" दलित समाज के आपस के भाईचारे की भावना का वर्णन किया है।

तुम्हें बदलना ही होगा इस उपन्यास में दलित परिवारों की स्थिति चिंताजनक है। ज्ञान शक्ति का महत्व बढ़ाया है। धीरज कुमार नामक पत्र दलित जाति में जन जागृति शिक्षा का प्रसार करने का कार्य करते हैं। समाज में फैली वर्णवादी व्यवस्था का विरोध करते हैं। दलित मुक्ति और स्त्री मुक्ति के लिए वह कार्य करते हैं। धीरज कुमार समाज में परिवर्तन करना चाहता है। वह इस परिवर्तन की शुरुआत अपने घर से ही करता है। वह अपने माता-पिता को पितृसत्ताक रोजगार करने से मना करता है। इस पर ठेकेदार के द्वारा धीरज को जेल भिजवा दिया जाता है। इस पर सभी कर्मचारियों से गुस्सा आता है, उनकी एकता देखकर उसको छोड़ना पड़ता है। यह वाल्मीकि समाज के एकता का परिचय है। उपन्यास की पात्र महिमा दलित महिलाओं में ही जागृति निर्माण करने का कार्य करती है। सवर्ण पात्र चमन लाल और दलित पात्र महिमा की शादी होती है। इस पर वह सोचती है, "अगर हमारी जातियों की लड़कियां सवर्ण परिवार के समझदार लड़कों से विवाह करने लगी तो समाज में सामाजिक समानता जल्दी आ सकती है।" संवर्ण लोगों के साथ रहने से समाज की स्थिति सुधर सकती है। महिमा अपने जाति की स्थिति जानती है दलित समाज में अंधविश्वास यह एक बड़ी समस्या है। यह सोचकर ही वो चमन लाल से शादी करती है। शादी के बाद ससुराल जाती है, तो उसके अरमान बह जाते है। उसके ससुराल वाले बोलते हैं कि दलित जाति की बहू हमारे घर नहीं चलती है। उसे अस्पृश्य होने के कारण घर वाले उसको टोकते हैं। फिर भी वह धीरे-धीरे अपने बलबूते पर अपनी लड़ाई लड़ना शुरू कर देती है। वह धीरे-धीरे अपना अस्तित्व कायम करने लगती है। घर में होने वाली हर एक गोष्टी में वो शामिल होती है। वह सोचती है "जब तक पुरुषों के विचार और व्यवहार में फर्क रहेगा तब तक महिलाएं खुले दिल और दिमाग के साथ सो नहीं पाएगी वह अपने सीमित कठघरे से बाहर निकल नहीं पाएगी। इसका जिम्मेदार पुरुष है, पुरुष स्वतंत्रता के बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। मगर सही मायने में वे स्त्रियों की सफलता से डरते हैं, कतराते हैं, उन्हें लगता है कि वह अपनी महिलाओं को घर में कैद रखकर ही महिलाओं का उद्धार कर लेगी।

वर्ण जाति भेद के विरुद्ध सामाजिक समानता की आवश्यकता इस विषय पर सेमिनार आयोजित करके उसमें मेहमानों को बुलाया गया। सब लोग अपने-अपने विचार प्रकट कर रहे थे। उसमें कई लोगों ने

सवर्ण पक्ष में तो, कई लोगों ने दलित पक्ष में अपने विचार प्रकट किए। उसमें उसके बाद अंतर्जातीय विवाह के बारे में भी बातचीत होने लगी। "अंतर्जातीय विवाह हमेशा खुशी-खुशी ही होने चाहिए, तभी वह सफल हो सकते हैं, इससे आपस में मतभेद नहीं रहेंगे।" धीरज कुमार और उषा की सगाई की घोषणा होने के बाद दोनों परिवार सहमति दर्शाते हैं, यह सुनकर महिमा बोली "आज बजाज परिवार पूरी तरह से वर्ण और जाति भेद के विरुद्ध सामाजिक समता वादी बन गया।"

इस उपन्यास में विविध संस्थाओं के कार्य का विवरण किया। दलित जाति की लड़की उच्च वर्ण व्यक्ति के साथ विवाह करके साहस विरोध से क्षमता स्वतंत्रता आसानी से पा सकती है। इसमें अंतर्जातीय विवाह को महत्व दिया गया है। अंतर्जातीय विवाह से जातिभेद और वर्ण व्यवस्था में बदलाव किया जा सकता है। धीरज कुमार जैसे आदमी समाज में बदलाव लाने की शुरुआत अपने घर से ही करते हैं। माता-पिता पितृसत्ताक रोजगार करते हैं। उनको मना करके सम्मान की जिंदगी जीने के लिए प्रेरित किया है। इस उपन्यास में समाज में स्थित समस्याओं की बात की गई है और उसमें किसी तरह परिवर्तन हुआ है यह दिखाया है। सदियों से चली आ रही जाति भेद की परंपरा बदल रही है। महिमा को उसके घर वालों ने अपनाया।

'वह लड़की' उपन्यास में दलित जीवन की समस्याओं को उकेरा गया है। दलित समाज में अपने घर परिवार में स्त्रियों का शोषण और अत्याचार होता रहा है। दलित लोग ना बच्चों को शिक्षा दे पा रहे हैं और ना अपने हक के लिए लड़ पा रहे हैं। गरीबी, अभाव, जातीभेद और हीनता के कारण वे हमेशा मजबूर ही रहे हैं। लेकिन समाज में जागरूकता लाने के लिए अनेक संस्थाओं ने कार्य किया है। ऐसी अनेक संस्थाएं हैं जिनमें दलित पुरुषों के साथ दलित महिलाएं सामाजिक आंदोलन में अपना सहयोग दे रही है। "समाज जागृति दलित मुक्ति और नारी मुक्ति के कार्य बरसों से हो रहे हैं। सबसे पहले तथागत गौतम बुद्ध ने ही महिलाओं को समता, स्वतंत्रता और सम्मान का अधिकार देते हुए अपने खुद बौद्ध संघ में प्रवेश किया। संत कबीर ने अपने साहित्य में स्त्री पुरुष समानता और स्त्रियों को सम्मान देने वाली बात लिखि।" शैला और निशा अखिल भारतीय दलित महिला जागृति नामक संस्था से जुड़े हैं। निशा दलित शोषित महिलाओं के लिए हमेशा तैयार रहती है। शिक्षा और आत्मनिर्भरता के माध्यम से वे जाति आधारित भेदभाव को खत्म करने का प्रयास करते हैं। उपन्यास की पात्र शैला जो शिक्षित है। अन्याय, शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है, वह नारी को अबला से सबला बनाने की कोशिश करती है। वह कहती हैं- "ऐसा धर्म ऐसी परंपराएं जो हमारे साथ अन्याय करते हैं, उन्हें मानाना धर्म नहीं है। चुपचाप अन्य सहना धर्म नहीं है। उसका विरोध करना चाहिए।" इस उपन्यास की एक बार एक पात्र नमिता को उसकी सास समझाती है। "औरत का दिल तो धरती की तरह है वह सब कुछ सहकर भी अपनी धुरी पर घूमती रहती है ऐसी ही औरत जात होती है, इसी में उसकी मर्यादा है, इसी में उसकी भलाई है।" दलित परिवारों में बहु पर बंधन नहीं रहते हैं, फिर भी कई लोग संवर्ण लोगों की नकल करते हुए परंपराओं का अंधानुकरण कर रहे हैं। इसलिए सोच बदलने की आवश्यकता है। हमें ऐसी वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था और सरनेम का बहिष्कार करना चाहिए। हमें समता सम्मान के अधिकार लिखित रूप से संविधान में मिले हैं।

शोषण पीड़ितों अछूतो का इतिहास जानना होगा, तभी हम अपने वर्तमान और भविष्य को समझ सकेंगे। समाज व्यवस्था बदलने के लिए लड़कियों को भी बदलना होगा।

नीला आकाश में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण है। जहां सुविधाओं का अभाव है, शिक्षा उनके जीवन में नहीं है इसलिए इनको सवर्ण लोगों का शिकार होना पड़ता है इनके द्वारा पितृसत्ताक रोजगार करने के लिए मजबूर किया जाता है। इस उपन्यास में दलित जातियां समय के साथ परिवर्तन होता नजर आ रहा है। इस उपन्यास के पात्र अपने जीवन से प्रेरित होकर आगे आने वाली पीढ़ीयो को जागृत कर रहे हैं।

तुम्हें बदलना ही होगा उपन्यास कथा में दलित जीवन की वर्ण, जातिभेद की समस्याओं को आज के संदर्भ में बताया है। इस उपन्यास में अंतर्जातिय विवाहों से जातिभेद को मिटाने की बात कही गई है। हम परिवर्तन चाहते हैं परिवर्तन की बात करते हैं तब यह परिवर्तन हर तरफ होना चाहिए। वह लड़की उपन्यास में दलित नारी संघर्ष की व्यथा है। महिलाओं के प्रति होने वाले अन्याय, अत्याचार के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया है। समाज में स्त्रियों के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण बदलने का ज्वलंत उदाहरण है। नारी अपने ऊपर हो रहे अन्याय, अत्याचारों का अंत करेगी। दलित और दलित नारी के लिए यह उपन्यास महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

शोध-पत्र का निष्कर्ष यह है कि सुशीला टाकभौरे ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से न केवल दलित समाज की जमीनी सच्चाइयों को उजागर किया है, बल्कि दलित नारी के आत्मसंघर्ष, आत्मसम्मान, और सामाजिक पुनरुत्थान को भी स्वर प्रदान किया है। उन्होंने परंपरागत जातिगत ढांचे को चुनौती देते हुए शिक्षा, समानता, और सामाजिक चेतना को दलितों की मुक्ति का माध्यम बताया है। उनके साहित्य में परिवर्तन की चेतना है, जो आज के समाज को एक नए दृष्टिकोण से सोचने की प्रेरणा देती है। उनके कथा-साहित्य में एक ओर जहाँ दलित नारी की वेदना झलकती है, वहीं दूसरी ओर उसकी शक्ति और आत्मनिर्भरता का उभार भी दिखाई देता है।

संदर्भ :

टाकभौरे, सुशीला. (2006). *टूटता वहम*. नागपुर: सम्यक प्रकाशन.

टाकभौरे, सुशीला. (2008). *अनुभूति के घेरे*. नागपुर: सम्यक प्रकाशन.

टाकभौरे, सुशीला. (2010). *संघर्ष*. नागपुर: सम्यक प्रकाशन.

टाकभौरे, सुशीला. (2012). *नीला आकाश (उपन्यास)*. नागपुर: सम्यक प्रकाशन.

टाकभौरे, सुशीला. (2015). *तुम्हें बदलना ही होगा (उपन्यास)*. नागपुर: सम्यक प्रकाशन.

टाकभौरे, सुशीला. (2018). *वह लड़की (उपन्यास)*. नागपुर: सम्यक प्रकाशन.